हिन्दी तथा मिज़ोउ जन जाति भाषा की वाक्य रचना

www.ignited.in

Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education

Vol. X, Issue No. XX, Oct-2015, ISSN 2230-7540

AN INTERNATIONALLY INDEXED PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL

Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. X, Issue No. XX, October-2015, ISSN 2230-7540

हिन्दी तथा मिज़ोउ जन जाति भाषा की वाक्य रचना

Dr. Louis Hauhnar

Associate Professor, Mizoram Hindi Training College

---------------------------------X---------------------------------

जैसा कि हम जानते हैं, मिज़ोउरम भारत देश की उत्तर-पूर्वी सीमा का एक छोटा-सा अहिन्दी भाषी राज्य है, जिसकी जनसंख्या लगभग ग्यारह लाख है। इसका क्षेत्र फल 21,087 वर्ग कि.मी. है। बंगला देश और बर्मा दोनों इसकी सीमा को छूते है। मिज़ोउ भाषा, चीनी-तिब्बती-बर्मा परिवार की मानी जाती है। यह भारत की मुख्य भाषाओं के न निकट है और न उससे सम्बंधित है इसलिए मिज़ोउ जन जाति के लिए हिन्दी सीखना एक विदेशी भाषा सीखना जैसा है।

विषय पर जाने से पूर्व मैं आप लागों को मिज़ोउरम और उस जन जाति के इतिहास को संक्षेप में बताना चाहूँगी। आजादी के पहले यह प्रदेश करीब-करीब पाँच-साढ़े पाँच दशक तक पूर्ण रूप से अंग्रेजो के आधीन था। इन्हीं पाँच दशकों के अंतर्गत ही अंग्रेजो ने इस जन जाति का परिचय रोमन लिपि से कराया और अपनी भाषा को लिपिवद्ध करने योग्य लोगों को बनाया।

मिज़ोउरम प्रदेश का यह ऐतिहासिक सत्य है कि सन् 1966 में जब केन्द्र सरकार ने मिज़ोउरम में विद्रोह रोकने के लिए सेना भेजी तो उस कार्यवाही में कई घर, गाँव जलकर राख हो गए, कई बच्चे अनाथ हुए और बहुत से लोग मारे गए। पहले से ही मिज़ोउ जन जातियों की मानसिकता अलगाववादी विचार धारा से प्रेरित थी, वे अपने को भारतीय कहलाने से इंकार करते थे। इस कार्यवाई के कारण मिज़ोउवासी भारत सरकार से और खिन्न रहे, वे अपने को अंग्रेज सरकार के आधीन मानना अधिक पसंद करते थे क्योंकि कहा जा चुका है अंग्रेज लोगों ने इस जन-जाति को पढ़ना-लिखना सिखाया, सभ्यता का पाठ पढ़ाया। इन्हीं लोंगों ने इस जन जाति में अंग्रेजी भाषा की प्रौढ़ता, गरिमा एवं व्यापकता के गुणों को ठूस-ठूस कर भरा। परिणाम स्वरूप इस जन जातियों के सामाजिक और सांस्कृतिक मूल्यों के साथ-साथ जीवन के अन्य पक्षों में भी अंग्रेजों के संस्कार या यों कहे पाश्चात्य संस्कार की गहरी छाप पड़ी।

किन्तु समय बीतता गया, देश की तरक्की होती गई। मिज़ोउरम प्रदेश को 1972 में केन्द्र शासित राज्य की मान्यता प्राप्त हुई। वे अपने अतीत को धीरे-धीरे भुलाने लगे और भारतीय विचार धारा के नज़दीक पहुँचने का प्रयास करने लगे। यह मानसिकता धीरे-धीरे वढ़ती गई और आज यह गर्व से कहा जा सकता है कि सभी मिज़ोउ जन जाति अपने को भारतीय कहलाने में नहीं झिझकते या यो कहिए गर्व का अनुभव करते हैं। यह सर्वविदित है कि वर्त मान अपनी अतीत की सीढ़ियों पर चढ़ता हुआ भविष्य का निर्माण करता है।

अब मिज़ोउरम सरकार तथा जन जाति को भी राष्ट्रभाषा हिन्दी की आवश्यकता महसूस हुई जिसके फलस्वरूप अपनी शिक्षा प्रणाली में हिन्दी के शिक्षण-प्रशिक्षण को महत्वपूर्ण स्थान दिया। इतना ही नहीं अब 5 से 8 तक की कक्षाओं में हिन्दी को अनिवार्य विषय के रूप में पढ़ाई जाती है और कक्षा 9 तथा दस में भी पढ़ाई जाती है, किन्तु वार्षिक परीक्षा में सम्मिलित नहीं की जाती। गैर सरकारी स्कूलों में तो हिंदी को कक्षा 1 या 3 से पढ़ाई जाती है।

राज्य सरकार के अथक प्रयास से आज मिज़ोउरम पूर्वान्तर राज्यों में हिंदी शिक्षण के क्षेत्र में प्रमुख स्थान रखता है। यहाँ मिज़ोउरम सरकार ने हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए कई साधनों को माध्यम के रूप में अपनाया है। सप्ताह में दो बार आकाशवाणी द्वारा हिंदी पाठ प्रसारण का कार्यक्रम है। इसमें हिंदी अध्यापकों द्वारा कराया जाता है। यह पाठ मिज़ोउ भाषियों की आवश्यकता को देखकर तैयार किया जाता है। इन पाठों में अनुकरण विधि का पालन होता है। पहले हिंदी अध्यापक पाठ्य में निहित वाक्य/शब्द बोलते हैं, छात्र उनका अनुकरण करते हैं।

अब तो F.M द्वारा हिन्दी फिल्मों के फरमाईश गीतों का भी प्रसारण होने लगा है जिसमें मिज़ोउ जन जाति के युवक-युवतियाँ ही कार्यक्रम का संचालन करते हैं। हिन्दी दिवस के अवसर पर निवंध लेखन, काव्य पाठ, अंत्याक्षरी आदि प्रतियोगिताएँ आयोजित की जाती है।

दूरदर्शन में भी सप्ताह में दो बार 'आइए हिन्दी सीखे' पाठ का प्रसारण किया जाता है जिसका इस जन जाति के लोग (बच्चे से बूढ़े तक) बेसब्री से इंतजार करते हैं। इसके अलावा भी Hindi Spoken Class कई जगह खोले गए जहाँ बच्चे, जवान, बूढ़े नियमित रूप से हिंदी सीखने आते हैं।

उपर्युक्त सभी कार्यक्रम राजभाषा हिन्दी के प्रयोग में उत्साहवर्धक हैं।

मिज़ोउरम सरकार के सहयोग से 1975 में हिन्दी प्रशिक्षण महाविद्यालय की स्थापना की गई जिसमें केन्द्रीय हिन्दी संस्थान आगरा का विशेष योगदान रहा।

इस संस्था में सर्वप्रथम डॉ. तेजनारायणलाल प्राचार्य बने,

तत्पश्चात डॉ. एल. एन शर्मा, फिर डॉ. के. वी. विश्वनाथ, डॉ. आर. के. कुमार, डॉ. पितमवर

उनके बाद श्री आर ज़हलेईआ, डॉ. सी. चोङथनमोयी, श्री एस. कुमार, डॉ. एच. डिङकिमी आए। इन्हीं लोगों के शुभारंभ में मिज़ोउरम हिन्दी प्रशिक्षण महाविद्यालय ने उन्नति के पथ पर कदम बढ़ाए। यही कारण है कि हम केन्द्रीय हिन्दी संस्थान को अपने माता-पिता मानते हैं। मैं पहले भी जिक्र कर चुकी हूँ कि मिज़ोउरम पूर्वोतर भारत के अन्य राज्यों से हिन्दी में पिछड़ा है। अतः आप लोगों से नम्र निवेदन है कि मिज़ोउ जन-जाति को हिन्दी सीखने के प्रति प्रेरणा एवं उत्साह देने हेतु उनकी कमियों को नज़रअंदाज कर उन्हें माता-पिता का प्यार दे। नहीं तो वे निराश हो जाएंगे और हिन्दी के प्रति उदासीन हो जाएंगे।

हिन्दी भाषा शिक्षण के अंतर्गत मिज़ोउरम हिन्दी प्रचार सभा, वर्धा समिति आदि का भी संदर्भ देना चाहती हूँ जो हिन्दी के प्रचार-प्रसार में अपनी पूरी

शक्ति लगा रही है। ये संस्थाएं हजारों लोगों को हिन्दी अध्यापक अध्यापिका के योग्य बनाकर बेरोजगारी की समस्या को हल करने में सहायता दे रही है। मिज़ोउ समाज में पहले तो हिन्दी शिक्षकों के प्रति कोई विशेष मान या इज्जत नहीं था। सोचा यह जाता था कि चारों ओर से असफल लोग ही हिन्दी पढ़ने के क्षेत्र में आते हैं। अत विद्यालयों में छात्रों की रवैया भी हिन्दी के प्रति नकारात्मक ही होता था। इतना ही नहीं अन्य अध्यापकों की तुलना में हिन्दी के अध्यापकों की स्थिति को काफी निम्न माना जाता था। परन्तु उन दिनों भी हिन्दी शिक्षकों के पास एक ऐसा पक्ष भी था जो उन्हें अन्य अध्यापकों के आगे सिर ऊंचा कर जीने के लिए प्रोत्साहित करती थी और वह पक्ष था अन्य विषय के अध्यापकों की अपेक्षा हिन्दी शिक्षकों का उच्च वेतनमान 125 अन्य शिक्षक 140 हिंदी शिक्षक उन दिनों यही वह अस्त्र था जिस के सहारे हिन्दी शिक्षकगण समाज में कुछ प्रतिष्ठा पा सकतेथे। अन्यथा प्रायः चारों ओर नकारात्मक तत्वों का सामना करना पड़ता था उन दिनों के हिन्दी शिक्षकों को। फिर भी दाद देनी होगी हमें उन दिनों के हिन्दी शिक्षकों की जिन्होंने सभी प्रकार के तिरस्कारों को सहकर भी लोगों के मन में हिन्दी के प्रति धीरे धीरे ही सही एक चाहत एवं जागरूकता के वीज को बोया जिसके फल का रसास्वादन आज हम साक्षात रूप में कर रहे हैं।

शूरू में हम कह चुके हैं मिज़ोउ जन जाति को भाषा संस्कृति आदि भारत की मुख्य भाषा संस्कृति से एकदम भिन्न है। मिज़ोउ भाषा को रोमन लिपि में लिखी जाती है जब कि हिन्दी को देवनागरी लिपि में। यही कारण है कि मिज़ोउ जन जाति को हिन्दी सीखने में काफी मेहनत करनी पड़ती है अर्थात् उन्हें कई स्तरों पर कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। यहां मेरा विषय है वाक्य स्तर पर। फिर भी विषय पर जाने से पूर्व उन मुख्य स्तरों पर जहां वे त्रुटियां करते हैं संक्षेप में आप लोगों को ज्ञान कराना चाहूंगी।

1. उच्चारण स्तर पर मिज़ोउ भाषा के स्वर व्यंजन और हिन्दी भाषा के स्वर व्यंजन में काफी अंतर है इसलिए इस स्तर पर उन्हें कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है।

जैसे

ड़ र कहना

ढ़ र

ढ द

श स

ष स

ण न

ध द

घ ग

त्र ट्र

ऊ उ

ई इ

2. लेखन स्तर पर हम पहले बता चुके हैं कि हिन्दी और मिज़ोउ वर्णो में जमीन आसमान का अंतर है। वे हिन्दी के वर्णो में मिलते जुलते वर्ण

क फ ख ब ग घ ज ड ड़ ढ ढ़ म श प भ ड ई उ ऊ आदि में

मिज़ोउ छात्र अंतर नहीं कर पाते क्योंकि इनकी बनावट उन्हें एक जैसी लगती है। अत इस स्तर पर बहुत गलतियां करते हैं। इतना ही नहीं मिज़ोउ भाषा में मात्राओं की व्यवस्था नहीं है किन्तु हिन्दी भाषा में अर्थात् ध्वनि में कई मात्राएं हैं जिसे मिज़ोउ छात्र के लिए याद कर पाना असंभव सा है।

जैसे : दल दाल किस्मत कीमत कुल कूल आदि।

3. लिंग स्तर पर सभी भाषाओं की अपनी अपनी लिंग व्यवस्था होती है। मिज़ोउ भाषा की लिंग व्यवस्था हिन्दी भाषा की लिंग व्यवस्था से अलग है। मिज़ोउ भाषा में हिन्दी भाषा की तरह निर्जीव वस्तुओं में स्त्रीलिंग पुल्लिंग की व्यवस्था नहीं हैं। मिज़ोउ भाषा में इकारांत शब्द स्त्रीलिंग और आकारांत शब्द पुल्लिंग समझे जाते हैं। जैसे Lala लाला पुल्लिंग Lali लाली स्त्रीलिंग हिन्दी भाषा में जब पानी प्रति प्रेमी प्रेमिका आदि शब्द आते हैं तो मिज़ोउ जन जाति के लिए संदेह होना स्वभाविक हो जाता है। वाक्य में जैसे 'मैंने चाय पी' को 'मैंने चाय पिया' कहते हैं। 'मैंने गाड़ी चलायी' को 'मैंने गाड़ी चलाया' कहते हैं। क्योंकि वे अंतर नहीं कर पाते कि कब पी और पिया चलायी चलाया कहा जाए। इस स्तर पर मिज़ोउ जन जाति के लोग सबसे अधिक गलतियां करते हैं।

4. वचन के स्तर पर मिज़ोउ भाषा में वचन की व्यवस्था काफी सरल है जब कि हिन्दी में वचन की व्यवस्था काफी कठिन है। मिज़ोउ भाषी इस पर भी बहुत गलतियां करते हैं।

जैसे वहन बहने है हैं शिक्षक शिक्षकगण लड़की जाएगी लड़कियां जाएंगी आदि जैसे वाक्य को याद नहीं कर पाते। मिज़ोउ भाषा में बहुवचन के लिए 'ते' (te)

लड़की Hmeichhe naupang

लड़कियां Hmeichhe naupang te

मात्र लगाने से बहुवचन हो जाता है।

वाक्य स्तर अर्थात् वाक्य रचना विचारो के आदान प्रदान में वाक्य भाषा की लघुतम इकाई है। जब भी हम अपने विचारों को व्यक्त करना चाहते हैं तो उन्हें वाक्यों में ही व्यक्त करते हैं।

व्याकरण की दृष्टि से प्रत्येक भाषा की अपनी अपनी पृथक पृथक व्यवस्था होती है। यह व्याकरणिक कोटियों को नियबद्ध रूप से व्यवस्थित करती है। यह नियबद्ध व्यवस्था पद्धति या नियम प्रत्येक भाषा की अपनी अलग पहचान को ही एक तरह से स्पष्ट करती है। व्याकरणिक व्यवस्था की दृष्टि से हिन्दी के वाक्यों को देखा जाए तो सकर्मक क्रिया के संदर्भ में दिखाई देते हैं। परन्तु आकर्मक क्रिया के वाक्यों में वाक्य का स्वरूप कर्ता कर्म क्रिया की पद्धति दिखाई पड़ती है। उदाहरण के लिए

मैं रोटी खाता हूं मैं आगरा जाता हूं मिज़ोउ भाषा में यह नियम कुछ परिवर्तित रूप में दिखाई देता है। सकर्मक और अकर्मक वाक्यों के संदर्भ में हिन्दी वाक्य पद्धति और मिज़ोउ वाक्य पद्धति में काफी समानता दिखाई देती है परन्तु मिज़ोउ में कभी कर्ता कर्म क्रिया की पद्धति के साथ साथ वाक्यगत अर्थ के उद्देश्य को बदले बिना कभी कभी कर्म कर्ता क्रिया का चलन भी बहुधा दिखाई पड़ता है।

जैसे Mai ka ei मैं कद्दू खाता हूं

यहां Mai कद्दू कर्म पहले प्रयोग हुआ है।

तत्पश्चात कर्ता □□ Ka□मैं□ ei□खाता हूँ□□का प्रयोग हुआ है।इसी तरह Agra ka kal □मैं आगरा जाता हूँ□□ इसमें भी पूर्व वाक्य जैसी व्यवस्था है। आगरा कर्म पहले प्रयोग हुआ है तत्पश्चात □कर्ता □ Ka□मैं□और kal□जाता हूँ□□का प्रयोग हुआ है।

1□ सरल वाक्य □□ जिस वाक्य में एक ही □क्रिया होती है उसे सरल वाक्य कहते हैं।इसमें एक उद्देश्य □कर्ता□और एक विधेय□□क्रिया□होता है।

उदाहरण के लिए □□ पानी बरसता है □Ruah a sur

बिजली चमकती है □Kawl a phe

सरल वाक्य के अंतर्गत वाक्य छोटे या लम्बे हो सकते हैं।अतः बिना विधेय के कोई भी वाक्य पूर्ण नहीहोता।यह नियम हिन्दी और मिज़ोउ दोनों ही भाषाओं में निहित है।

2□ मिश्र वाक्य □□ जिस वाक्य में मुख्य उद्देश्य और मुख्य विधेय के अलावा एक या अधिक समापिका □क्रियाएं□हो उसे मिश्र वाक्य कहते हैं।

उदाहरण के लिए □□मैं खाना खा चुका तब वह आया।

Ka chaw ei khamah a lokal.

मिज़ोउ भाषा और हिन्दी भाषा में मिश्र वाक्य के नियम बहुत भिन्न नहीं दिखाई देते हैं।

3□ संयुक्त वाक्य ः□ संयुक्त वाक्य के नियमों में हिन्दी और मिज़ोउ दोनों भाषाओं के वाक्यों में कोई विशेष अंतर नहीं है।मिज़ोउ भाषा के संयुक्त वाक्य में भी सभी वाक्य स्वतंत्र और अलग सत्ता के होते हैं।

उदाहरण □□Chaw ka ei a tichuan ka riltam a reh ta.

मैंने खाना खाया और मेरी भूख मिट गई।

4□ हिन्दी में विशेषण विशेष्य या संज्ञा के पहले लगाया जाता है□परन्तु मिज़ोउ में विशेषण विशेष्य या संज्ञा के बाद आता है।

हिन्दी □काला लड़का आया।

मिज़ोउ □Mipa naupang hang a local लड़का काला आया

हिन्दी □मीठी चाय पियो।

मिज़ोउ □Thingpui thlum in rawh. चाय मीठी पियो

5□ हिन्दी में □क्रिया विशेषण□क्रिया के पहले आता है□परन्तु मिज़ोउ में वाक्य की दृष्टि से □क्रिया विशेषण का अलग रूप दिखाई देता है।

उदाहरण □□ हिन्दी □वह तेज दौड़ता है।

A chak tlan

जब कि A tlan chak होना चाहिए था।

6□ मिज़ोउ भाषी छात्र अपने लेखन में कर्ता □क्रिया से संबंधित त्रुटिया□ करते है।

जैसे □□ 1□ तुम अपना नाम बताए□बताओ□

2□ हम काम शुरु करू□□करें□

3□ आप यहा□बैठो □बैठिए□

7□ मिज़ोउ भाषी छात्र भविष्यकाल के वाक्यों में पुरूष□वचन तथा लिंग□वचन की अन्वितिगत गलती करते हैं।

उदाहरण □□ मैं स्कूल जाएगा □जाऊंगा□

मैं कॉलेज जाएगी □जाऊंगी□

हम खाना खाएगा □खाएंगे□

तुम खाना खाएगा □खाओगे□

तुम मेरी मदद करेगी □करोगी□

8□ मिज़ोउ छात्र वाक्यों में □क्रिया के वर्तमान कालिक कृदंत रूपों में लिंग वचन की अन्वितिगत त्रुटिया□करते हैं।

उदाहरण □□लड़की खाना खाता है।□खाती□

लड़की नाचता है। □नाचती□

गुरूजी अखबार पढ़ता है। □पढ़ते□

वह हमें प्यार करते है। □करता□

9□ मिज़ोउ छात्र कालवाची सहायक □क्रियाओं में लिंग वचन अन्वितिगत त्रुटिया□करते हैं।बहुवचन स्त्रीलिंग का पुल्लिंग रूप में प्रयोग करते हैं।

उदाहरण □□महात्मागांधी राष्ट्रपिता था। □थे□

मेरी माताजी बीमार है।□हैं□

मैं पढ़ने में तेज है। □हूँ□

हवा जोर से वह रहा है। □रही है□

10□ मिज़ोउ छात्र मैं और मुझे को प्रयोग में भी गलतिया□करते हैं।क्योंकि मिज़ोउ भाषा में मैं और मुझे को अलग से प्रयोग करने की व्यवस्था नहीं है।इसलिए इस स्तर पर बहुत गलतिया□करते हैं।

Ka ril a tam.

मुझे भूख लगी है।

Ka tha e.

मैं ठीक हूँ□

11□ मिज़ोउ जन□जाति के लोग जब हिन्दी का प्रयोग करने लगते हैं तो वे भ्रम में पड़ जाते हैं कि कब में□से□पर□का□को□मे आदि कारक चिन्हों का प्रयोग करें।

उदाहरण □□

1□ लला□□□□खाना खाया। □ने□

2□ लला का बुलाओ। □को□

3□ चाकू पर आम काटो। □से□

4□ पैदल से आओ। □पैदल आओ□

बाहर जाओ के स्थान पर बाहर में जाओ कहते है। क्योंकि मिज़ोउ भाषा के नियम के अनुसार तो Pawn ah kal rawh □बाहर में जाओ□कहना पढ़ता है। अत□अधिकतर लोग इसमें गलतिया□करते हैं। इसके अलावा भी करते हैं वाक्या रचना में कई स्तरों पर कठिनाइयों का सामना।

उपर्युक्त सभी उदाहरणों से निष्कर्ष निकलता है कि मिज़ोउ जन□जाति के लिए हिन्दी सीखना बहुत ही श्रमसाध्य कार्य है फिर भी वे इसकी उपयोगिता अर्थात् महत्व को जानकर हिन्दी सीखने में पूरी शक्ति लगा रहे है और आप लोगो से नम्र निवेदन करती हू□कि हिन्दी सीखने के प्रति मिज़ोउ जन जाति को प्रेरणा दे□उत्साहित करें।

सधन्यवाद।